इकाई 32 सामाजिक गतिशीलता के परिणाम

इकाई की रूपरेखा

32.0 उद्देश्य

32.1 प्रस्तावना

32.2 सामाजिक गतिशीलता के परिणामों के अध्ययन की पृष्ठभूमि

32.3 गतिशीलता के सामाजिक परिणाम

- 32.3.1 बूर्जुआवादी
- 32.3.2 श्रमिक वर्ग की विषमता
- 32.3.3 विस्तृत एवं विघटित मध्य वर्ग
- 32.3.4 सामाजिक गतिशीलता तथा वर्ग-निर्भरता की दर
- 32.3.5 सामाजिक व्यवस्था का रूप

32.4 सामाजिक गतिशीलता का राजनीतिक परिणाम

32.5 सामाजिक गतिशीलता का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिणाम

32.6 सारांश

32.7 शब्दावली

32.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

32.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

32.0 उद्देश्य

इस इकाई में सामाजिक गतिशीलता के सामाजिक, राजनीतिक तथा सामाजिक-, मनोवैज्ञानिक परिणामों का वर्णन किया गया है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- सामाजिक गतिशीलता का अर्थ समझ सकेंगे,
- तीन बड़े वर्गों—निम्न वर्ग, मध्य वर्ग तथा उच्च वर्ग—के लिए सामाजिक गतिशीलता के परिणाम जान सकेंगे,
- सामाजिक गतिशीलता के एक समग्र समाज के लिए परिणाम—सामाजिक व्यवस्था के रूप की चर्चा कर सकेंगे,
- सामाजिक गतिशीलता का सामाजिक वर्गों या श्रेणियों पर प्रभाव—राजनीतिक परिणाम; और
- एक आधुनिक औद्योगिक समाज में व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव—सामाजिक मनोवैज्ञानिक का अर्थ समझ सकेंगे।

32.1 प्रस्तावना

आप ऐसे सामाजिक स्तरीकरण के बारे में पहले ही जान चुके हैं जिसकी व्यवस्था के अनुसार किसी समाज के सदस्यों को उच्चतर या निम्नतर स्तरों में रखा जाता है। स्थितियाँ या स्तर हमेशा स्थिर नहीं होते। व्यक्तियों या समूहों द्वारा निर्धारित स्तर से ऊपर या नीचे की तरफ संचलन की संभावना बनी रहती है। इस ऊपर या नीचे की तरफ संचलन को सोपानात्मक गतिशीलता कहा जाता है। इसे प्रायः ऊपर की तरफ या नीचे की तरफ वाली गतिशीलता कहा जाता है। गतिशीलता समस्तरीय (पार्श्व) भी हो सकती है। अर्थात् एक स्थिति से उसी सामाजिक वर्ग या स्थिति के साथ दूसरी सामाजिक स्थिति में जाना। इस पार्श्विक गतिशीलता को समस्तरीय गतिशीलता के रूप में जाना जाता है।

सामाजिक गतिशीलता को प्रायः व्यावसायिक स्तरों के संदर्भ में आमदनी तथा उपभोग के नमूनों के आधार पर व्यक्तियों का समूहों का ऊपर या नीचे की तरफ गतिशील होना माना जाता है। पिछली इकाइयों में आपने सामाजिक गतिशीलता की विभिन्न सैद्धांतिक विचारधाराएँ, आयाम तथा घटक एवं शक्तियों के बारे में पढ़ा है। इस इकाई में हम सामाजिक गतिशीलता के एक अन्य पक्ष अर्थात् उसके परिणामों पर चर्चा करेंगे।

परिणामों से हमारा अभिप्राय सामाजिक गतिशीलता के प्रभावों से है। अब प्रश्न उठता है कि प्रभाव 'किसपर'? इसका प्रभाव न केवल व्यक्तियों या समूहों पर अपितु संपूर्ण समाज पर भी पड़ता है। इस इकाई में हम इसका अध्ययन करेंगे। इसलिए हम सामाजिक गतिशीलता के परिणामों का तीन कोणों से अध्ययन करेंगे। पहला—सामाजिक परिणाम। इसमें समग्र समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। दूसरा—राजनीतिक परिणाम। इसमें किसी समाज के विभिन्न वर्गों और संघों पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में चर्चा की जाएगी। अंतिम—सामाजिक—मनोवैज्ञानिक परिणाम। इसमें समाज में रहने वाले व्यक्ति के स्तर पर सामाजिक गतिशीलता के उस प्रभाव का वर्णन किया जाएगा जो शीघ्र गतिशीलता का अनुभव करता है।

32.2 सामाजिक गतिशीलता के परिणामों के अध्ययन की पृष्ठभूमि

सामाजिक गतिशीलता के परिणामों का उसके एक पक्ष के रूप में व्यवस्थित रूप से पहली बार पिटरीम ए. सोरोकिन द्वारा अध्ययन किया गया (सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता, 1927)। सोरोकिन ने गतिशीलता के प्रभावों को तीन आयामों से अध्ययन किया। ये हैं—समाज पर गतिशीलता का जनसांख्यिकीय प्रभाव, मानव व्यवहार एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव तथा समाज के संगठनों एवं उनकी प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला प्रभाव।

यद्यपि सोरोकिन ने अपने निष्कर्षों के समर्थन में विभिन्न समाजों से विशाल आँकड़े एकत्रित किए तो भी जिन तकनीकों के सहारे वह अपने निष्कर्षों पर पहुँचा वे पर्याप्त नहीं थे। अपने सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता के सिद्धांत को पुख्ता करने के लिए उन्होंने गतिशील और स्थिर समाजों के बीच विभाजन किया। इसके लिए सोरोकिन ने अतीत और समकालीन समाजों के बेहतरीन उदाहरणों का उल्लेख भी किया। बाद में अनेक समाजशास्त्रियों ने अनुसंधान की परिष्कृत तकनीकों और तरीकों के द्वारा कार्य किया तथा गतिशीलता के अध्ययन की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

बॉक्स 32.01

एस.एम.लिपेट और बैंडिक्स (1953), एस.एम. लिपसेट तथा एच. जैटरबर्ग (1956) द्वारा अनुसंधान किए गए। उन्होंने राष्ट्रीय सीमाओं के परे विश्व के अनेक समकालीन समाजों का अध्ययन और विश्लेषण किया। मेलबिन एम.प्यूमिन (1957) ने एक बड़े समाज में गतिशीलता का अध्ययन किया। उन्होंने शीघ्रता से गतिशील होने वाले समाज में व्याप्त कुछ व्यापक भ्रमों की अच्छी जानकारी प्रदान की। इससे उसके अच्छे भविष्य की संभावनाओं की आशा हुई। जबकि एम.जेनोविट्ज (1956) ने सामाजिक गतिशीलता के परिणामों के अपने अध्ययन को केवल अमेरिका तक ही सीमित रखा। जॉर्ज जिमेल की पुस्तक 'द स्ट्रेंजर', ई.वी.स्टोन इक्विस्ट की पुस्तक 'द मार्जिनल मैन' ने विघटित सामाजिक संरचना में एकल व्यक्ति की निराश जीवन-शैली का वर्णन किया।

रॉबर्ट माइकेल जैसे राजनीतिशास्त्र के विद्वानों ने प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व यूरोप के जन-साधारण के ऊपर या नीचे की तरफ गतिशील राजनीतिक व्यवहार (वोट डालना) का विस्तृत विश्लेषण किया। दूसरी ओर, जी. मोस्का तथा विल्फ्रेड पेरेटो जैसे श्रेष्ठ विद्वानों ने 'विशिष्ट वर्गों की गतिशीलता' के अपने सिद्धांत में गतिशीलता को बढ़ावा देने वाले सामाजिक तत्वों एवं राजनीतिक शक्तियों का विस्तृत वर्णन किया। मोस्का ने अपनी शोध को व्यापक बनाया और सामाजिक गतिशीलता के परिणामस्वरूप मध्य वर्ग—एक नए वर्ग की उत्पत्ति को उसमें शामिल किया।

प्रत्येक समाज का निर्माण एक ऐसे विशिष्ट तरीके से हुआ है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति या समूह को विशेष कार्य मिले हुए हैं जो समाज को बनाने और उसे बनाए रखने के लिए कार्य करते हैं। प्रत्येक समाज के लिए उसमें रहने वाले व्यक्तियों द्वारा किए जाने वाले कार्य समाज के लिए महत्वपूर्ण होने के अनुसार ही उन व्यक्तियों को उच्च या निम्न स्थिति अथवा श्रेणी प्रदान कराते हैं। इसलिए किसी भी समाज में समय के किसी बिंदु पर कुछ कार्य उच्च हैसियत रखते हैं और उनसे जुड़े हुए व्यक्तियों को दूसरों की अपेक्षा कुछ विशेषाधिकार प्राप्त हो जाते हैं। कार्य-निष्पादन के आधार पर व्यक्तियों और समूहों को समाज में उच्च या निम्न स्थितियाँ अथवा श्रेणियाँ प्रदान की जाती हैं। अर्थात् उस विशेष समाज में स्तरीकरण को वर्गों के (या भारतीय समाज में जातियों) के नाम से जाना जाता है। अतीत और वर्तमान के अनेक विचारकों के अनुसार श्रेष्ठता प्राप्ति के लिए (मार्क्स) दो विरोधी वर्ग-संघर्ष कर रहे होते हैं। इस स्थिति में अपने समाज में अधिकतम आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पुरस्कार पाने के लिए अपनी-अपनी नीतियों के साथ चार या इससे भी अधिक वर्ग हो सकते हैं (वेबर और अन्य)।

32.3 गतिशीलता के सामाजिक परिणाम

अब हम बूर्जुआवादी शोध ग्रंथ के साथ आरंभ हुए गतिशीलता के कुछ सामाजिक परिणामों की ओर ध्यान देंगे।

32.3.1 बूर्जुआवादी

मार्क्स की तुलना में अधिक सूक्ष्म दृष्टि से विषम समाज को देखने वाले अनेक आधुनिक समाजशास्त्रियों जैसे क्लार्क केर, जेरस्सी बर्नार्ड तथा 50 के और 60 के दशक के अनेक विद्वानों ने मार्क्स की विचारधारा के मुकाबले में बूर्जुआ शोध ग्रंथ प्रस्तुत किए। उनके

अनुसार हाथ से कार्य न करने वाले श्रमिकों की बढ़ती संख्या के कारण वे या मध्य वर्ग हाथ से कार्य करने वाले श्रमिकों अथवा मध्य वर्गों में संचलन करेंगे क्योंकि पूँजीवादी समाजों की संख्या में वृद्धि होगी। (बड़े पार्श्व वर्ग का समर्थन) लेकिन बूर्जुआ शोध ग्रंथों के विद्वानों के अनुसार औद्योगिक समाजों में एक ऐसी प्रक्रिया आरंभ हो रही थी जिसमें हाथ से कार्य करने वाले श्रमिकों की बढ़ती संख्या मध्य स्तर में प्रवेश कर रही थी। एक मध्य वर्ग बन रहा था। यह प्रक्रिया दूसरे विश्व युद्ध के बाद प्रौद्योगिकी में उन्नति और औद्योगिक अर्थव्यवस्था की प्रकृति के कारण आम तौर पर सम्पन्नता में वृद्धि होने से और स्पष्ट हो गई। इससे हाथ से कार्य करने वाले श्रमिकों की आमदनी में वृद्धि हुई और वह हाथ से कार्य न करने वाले सफेदपोश लोगों के वेतन के बराबर हो गए। अनेक लेखकों के अनुसार इन श्रमिकों को प्रभावशाली श्रमिक माना जाने लगा। इन्होंने मध्यवर्गीय स्तर को प्राप्त किया तथा व्यापक रूप से मध्य वर्ग के नियमों, मूल्यों तथा दृष्टिकोणों को अपनाने लगे। अब इस प्रक्रिया से यह विश्वास होने लगा कि स्तरीकरण प्रणाली का रूप भी बदल रहा है। तर्क दिया गया कि स्तरीकरण व्यवस्था की पिरामिड वाली संरचना में अधिकतर आबादी निर्धन श्रमिकों की सबसे नीचे तथा एक छोटा धनाढ्य समूह सबसे ऊपर था। वह संरचना अब स्तरीकरण व्यवस्था का डायमंड (हीरा) वाला रूप ले रही थी जिसमें अधितम आबादी मध्य वर्ग में आ गई। इससे **'विस्तृत मध्य समाज'** की परिभाषा अनुकूल लगने लगी।

अभ्यास 1

भारतीय समाज के लिए बूर्जुआवादी शोध प्रबंध किस प्रकार उपयुक्त हैं? कुछ सप्ताह तक समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं का अध्ययन करते हुए समुचित स्थिति की जानकारी प्राप्त करें और उन्हें अपनी नोटबुक में लिखें। इसके बाद अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों से इस विषय पर चर्चा करें।

बूर्जुआवादी शोध को व्यापक समर्थन मिलने के बावजूद गोल्डथोर्पे, लॉकवुड बेछोफर तथा प्लॉट द्वारा दक्षिण-पूर्व इंगलैंड के समृद्ध क्षेत्र—लूटोन में प्रभावशाली श्रमिकों में अनुसंधान किए गए। इस अनुसंधान के निष्कर्षों द्वारा इसका खंडन किया गया। इस क्षेत्र को बूर्जुआवादी संकल्पना की पुष्टि के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता था। यदि सबसे अनुकूल ढाँचे में बूर्जुआवादी प्रक्रिया प्रामाणिक नहीं रही तो इस संकल्पना का खंडन होने लगा।

इस क्षेत्र में सफेदपोश श्रमिकों के वेतन से अधिक वेतन लेने वाले श्रमिक उनसे चार मानदंडों में भी मुकाबला करते थे—कार्य के प्रति दृष्टिकोण, समुदाय में परस्पर मेलजोल का ढंग, महत्वाकांक्षा तथा सामाजिक महत्व एवं राजनीतिक विचार। इन सभी चार आधारों पर प्रभावशाली श्रमिक सफेदपोश श्रमिकों से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थे। इसके अतिरिक्त, वे सामुदायिक रूप से परस्पर मेलजोल के तरीके में, महत्वाकांक्षा और हाथ से कार्य करने वाले पारंपरिक श्रमिकों के सामाजिक महत्व के स्तर पर भी भिन्न थे। इसके अतिरिक्त, वे उपर्युक्त वर्णित चारों मानदंडों के संदर्भ में हाथ से कार्य करने वाले पारंपरिक श्रमिकों से अपने उद्देश्यों में भी अंतर रखते थे। इसलिए लोकवुड के मत को समर्थन मिला तथा उन्नत औद्योगिक अर्थव्यवस्था वाले समाजों में नए श्रमिक वर्ग के आविर्भाव के गोल्डथोर्प के निष्कर्षों को भी समर्थन मिला।

इसलिए बूर्जुआवादी विचारधारा वास्तविक अनुभव पर आधारित निष्कर्षों की अपेक्षा प्रभावशाली परिणामों पर आधारित एक परिकल्पना रह गई।

32.3.2 श्रमिक वर्ग की विषमता

तकनीकी उन्नति के साथ श्रमिक वर्ग की समरूपता में वृद्धि होने की मार्क्स की भविष्यवाणी

से भिन्न कुछ समाजशास्त्रियों को निश्चित रूप से कुछ विपरीत रुख दिखाई दिया। उन्नत एवं उन्नतिशील औद्योगिक समाजों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के कारण उद्योगों में इसके कार्यान्वयन से श्रमिक वर्ग का प्रत्येक सदस्य और विषय प्रभावित हो रहा था।

गल्फ डैहरेंडरफ के अनुसार श्रमिक वर्ग में विषमताएँ या असमानता बढ़ रही थी। प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के कारण जटिल मशीनें लगाई जा रही थीं जिनपर अच्छी तहर प्रशिक्षित एवं योग्य श्रमिक ही कार्य कर सकते थे ताकि वे आवश्यकतानुसार मशीनों की देखभाल और मरम्मत कर सकें। इसलिए पुरानी मशीनों पर साधारण कार्य करने वाले साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा तकनीकी रूप से प्रशिक्षित उच्च दक्षता प्राप्त व्यक्तियों की आवश्यकता थी। (मौसम की स्थितियों के बावजूद अब कृषि भी कठिन और कमरतोड़ कार्य नहीं रह गया था। कृषि में बढ़ते यंत्रीकरण ने इसका रूप तथा कार्य प्रकृति को बदल दिया था। अब इसे समाज की अर्थव्यवस्था बनाने वाले एक उद्योग के रूप में माना जाने लगा।) गल्फ डैहरेंडरफ के अनुसार विभिन्न उद्योगों में कार्य प्रकृति के अनुसार वांछित श्रमिकों को तीन विशिष्ट श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—अकुशल, अर्ध-कुशल तथा कुशल श्रमिक। श्रमिकों का यह वर्गीकरण आर्थिक आमदनी (वेतन) में अंतर तथा उसके अनुसार प्रत्येक की स्थिति के अनुसार था। इस प्रकार, कुशल श्रमिकों को अधिक वेतन, अधिक भत्ते, अधिक नौकरी-सुरक्षा मिलती थी। इस प्रकार, अन्य दो श्रेणियों के श्रमिकों की तुलना में उनकी बेहतर स्थिति हैसियत थी। डैहरेंडरफ का विश्वास है कि बीसवीं शताब्दी में श्रमिकों की गतिशीलता के कारण श्रमिक वर्ग की बात करना अर्थहीन है। अपितु उनका उपरोक्त विभिन्न श्रेणियों में विभाजन हो गया।

के.रॉबट्र्स, एफ.एम.मार्टिन तथा कुछ अन्य समाजशास्त्रियों ने आज के औद्योगिक समाजों में सामाजिक गतिशीलता के परिणामों के कारण उपरोक्त श्रमिक वर्ग की विषमता के विचार का खंडन किया है। इसकी अपेक्षा उन्होंने विभिन्न अनुसंधानों के निष्कर्षों के माध्यम से प्रस्ताव किया कि हाथ से कार्य करने वाले श्रमिकों को एक जैसी बाज़ारू-स्थिति एवं जीवन अवसरों का हिस्सा मिलता है। अपने वर्ग के सामान्य हितों के कारण श्रमिकों को अपनी साझी पहचान का पता होता है। इस प्रकार, समाज में अपनी विशिष्ट उप-संस्कृति के कारण वर्गों से उनमें भिन्नता होती है। अतः श्रमिक वर्ग की विषमता को सामाजिक गतिशीलता का प्रभाव कहना सही नहीं है। श्रमिक वर्ग भी एक सामाजिक वर्ग का निर्माण करता है और उसे विशिष्ट श्रेणियों में विभाजित नहीं किया जाना चाहिए।

32.3.3 विस्तृत एवं विघटित मध्य वर्ग

यद्यपि मध्य वर्ग अपने मूल रूप में समाज से कभी सम्बद्ध नहीं रहा तो भी यह इतना छोटा समूह था कि समाज के आर्थिक और शासन-व्यवस्था में उसकी मज़बूत उपस्थिति का अनुभव नहीं हुआ। आरंभिक दिनों में इसमें राज्य के निम्नतम कर्मचारी, छोटे-छोटे व्यवसायी तथा अपवादस्वरूप मुफ्त में ज़मीन पाने वाले कुछ किसान शामिल थे। लेकिन 19वीं शताब्दी में विभिन्न राष्ट्रों के हितों में विस्तार हुआ और शासन में राज्य की सक्रिय भूमिका की वृद्धि के कारण ऐसे शिक्षित एवं तकनीकी रूप से प्रशिक्षित व्यक्तियों की मॉग में वृद्धि हुई जो भौतिक रूप से तथा महत्वाकांक्षा के कारण गतिशील हो सके। इस प्रकार, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से मध्य वर्ग के विस्तार ने एक बार फिर मार्क्स की उस भविष्यवाणी को गलत सिद्ध कर दिया कि मध्य स्तर समाप्त हो जाएगा (एक व्यापक पार्श्व बन जाएगा)। इसके अतिरिक्त, मैक्स वेबर, ए.गिड्डन्स, फ्रेंक पार्किन आदि ने मध्य वर्ग की उत्पत्ति तथा उसके विस्तार को देखा है जो औद्योगिक अर्थव्यवस्था का युक्तिसंगत सहज उत्पत्ति है। प्रत्येक विद्वान ने वर्गों का श्रेणीकरण किया है। वेबर के अनुसार सफेदपोश मध्य वर्ग संकुचित होने की अपेक्षा विस्तृत हुआ है क्योंकि पूँजीवाद का विकास हुआ है और पूँजीवादी

प्रतिष्ठानों तथा आधुनिक राष्ट्रों के प्रशासनिक संगठनों को व्यापक संख्या में प्रशासनिक कर्मचारियों की आवश्यकता महसूस हुई। पूँजीवाद की उन्नति के साथ-साथ प्रतिष्ठानों में व्यापक परिवर्तन हो रहे थे। स्वामित्व और नियंत्रण में अलग होने से प्रबंधकों और प्रशासकों की भूमिका में विस्तार हो रहा था। इसलिए वेबर के अनुसार, मध्य वर्ग में ऐसे सम्पत्तिविहीन सफेदपोश श्रमिक शामिल हो जाते हैं जिनकी सामाजिक स्थिति और जीवन-शैली उनके द्वारा प्रदान किए गए शिल्प और सेवाओं पर निर्भर करती। दूसरे छोटे-छोटे बूर्जुआ अर्थात् छोटे-छोटे मालिक बड़े पूँजीपतियों से प्रतियोगिता के कारण सफेदपोश कार्यों में लग जाते हैं। एंटोनी गिड्डन्स विकसित पूँजीवादी समाज में तीन बड़े वर्ग मानता है जिसमें मध्य वर्ग अपनी शैक्षणिक एवं तकनीकी योग्याताओं पर आधारित है।

इस मध्य वर्ग को तकनीकी और शैक्षणिक योग्यताओं के आधार पर प्रत्येक को भिन्न-भिन्न पारिश्रमिक मिलता है जिसके अनुसार इसे अन्य उप-वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। इसलिए आधुनिक समाज में स्वयं मध्य वर्ग में प्रायः निम्नलिखित उप-वर्ग हैं—

- उच्च व्यवसायी, प्रबंधात्मक तथा प्रशासनिक वर्ग, जिसमें न्यायाधीश, कानूनविद, वकील, चिकित्सक, वास्तुविद, योजनाकार, विश्वविद्यालय के व्याख्याता, लेखाकार, वैज्ञानिक एवं अभियन्ता शामिल हैं।

- निम्न व्यवसायी, प्रबंधात्मक तथा प्रशासनिक वर्ग, जिसमें अध्यापक, नर्सें, सामाजिक कार्यकर्ता, तथा पुस्तकालयाध्यक्ष आदि शामिल हैं।

- आम सफेदपोश तथा लघु पर्यवेक्षक वर्ग, जिसमें लिपिक, फोरमैन आदि शामिल हैं।

प्रत्येक उप-विभाजन की न केवल व्यावसायिक पारिश्रमिक व्यवस्था में भिन्न स्थिति है अपितु किसी समाज-विशेष में सामाजिक मानदंड के अनुरूप भिन्न-भिन्न हैसियत और स्थिति होती है।

इन लोगों की न केवल भिन्न-भिन्न हैसियत तथा स्थिति होती है अपितु वे अपनी असमान मार्किट स्थिति तथा जीवन अवसर को भी जानते हैं। इसलिए 'वर्ग हैसियत' के अध्ययन में रॉबर्ट्स, कूक, क्लार्क तथा सेमनोफ इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मध्य वर्ग स्वयं बढ़ते हुए अनेक विभिन्न स्तरों में विभाजित हो जाता है जिसका स्तरीकरण व्यवस्था में अपनी स्थिति के बारे में एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। अतः मध्य-सफेदपोश वर्ग की सामान्य श्रेणी की चर्चा करें तो दूसरे मध्य वर्ग को गिनने की आवश्यकता नहीं। सफेदपोश समूह में विविध वर्ग हैसियत, मार्किट स्थितियाँ, जीवन अवसर तथा हित - यह आभास देते हैं कि मध्य वर्ग तेज़ी से विघटित हो रहा है (केनिथ रॉबर्ट्स) अतः मध्य वर्ग के रूप में एक ही सामाजिक वर्ग की बात विवाद का विषय है। इससे अच्छा तो इसे अनेक मध्य वर्गों के रूप में मान्यता देना अधिक सार्थक है।

32.3.4 सामाजिक गतिशीलता तथा वर्ग-निर्भरता की दर

सामाजिक गतिशीलता की दर किसी समाज में एक स्तर से दूसरे स्तर में संचलन की मात्रा होती है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था वाले समकालीन समाज में पहले वाले समाजों की अपेक्षा गतिशीलता दर पर्याप्त रूप से अधिक होती है। इसका कारण यह है कि सामाजिक गतिशीलता की ऊँची दर योग्यता, पात्रता, बुद्धिमत्ता, महत्वाकांक्षा तथा कठोर परिश्रम पर आधारित उपलब्धि का मानदंड है जो समाज में व्यक्ति की स्थिति निर्धारित करती है। वर्ग निर्भरता समाज में किसी वर्ग की सम्बद्धता की डिग्री होती है। इसलिए सामाजिक गतिशीलता के परिणाम वर्ग सम्बद्धता के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

अनेक समाजशास्त्रियों के अनुसार सामाजिक गतिशीलता की दर परोक्ष रूप से सामाजिक

निर्भरता के आनुपातिक होती है। कहा जा सकता है कि यदि सामाजिक गतिशीलता की दर कम होती है तो वर्ग-निर्भरता और सम्बद्धता अधिक होगी और यदि सामाजिक गतिशीलता की दर अधिक होगी तो वर्ग-निर्भरता और सम्बद्धता कम होगी। एंटोनी गिड्डन्स के अनुसार, यदि सामाजिक गतिशीलता की दर कम होगी तो अधिकांश व्यक्ति अपने मूल वर्ग में ही रहेंगे। इससे सामान्य जीवन के अनुभव पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते जाएंगे, विशिष्ट वर्ग की उप-संस्कृतियाँ बनेंगी तथा वर्ग की ठोस पहचान विकसित होंगी। इसके विपरीत, सामाजिक गतिशीलता की उच्च दर एक ही पीढ़ी में विभिन्न जीवन शैली का अनुभव कराएगी, वर्ग की विशिष्ट उप-संस्कृतियों का विघटन होगा तथा अगले उच्च वर्ग के साथ पहचान बनाने की महत्वाकांक्षा होगी। इस प्रकार, वर्ग निर्भरता समाप्ति की शुरुआत हो जाती है।

मार्क्स का भी विश्वास था कि सामाजिक गतिशीलता की उच्च दर से वर्ग निर्भरता की प्रवृत्ति कमज़ोर होती है। वर्गों की स्थिति विषम होती जाती है क्योंकि उनके सदस्य एक जैसी पृष्ठभूमि में रहना छोड़ देते हैं। वर्ग की विशिष्ट उप-संस्कृतियाँ पृथक-पृथक हो जाती हैं क्योंकि नियम, प्रवृत्तियाँ, तथा मूल्य किसी वर्ग-विशेष के लिए न केवल पीढ़ियों में अपितु एक ही पीढ़ी में परिवर्तित हो जाते हैं। इस प्रकार, मार्क्स के लिए वर्ग की जागरुकता और वर्ग विभाजन की प्रबलता की संभावना काफी हद तक कम होगी। जबकि राल्फ डैहरेंडरेफ के अनुसार समकालीन औद्योगिक समाजों में उच्च सामाजिक गतिशीलता की दर के कारण वर्ग-विभाजन का रूप बदल गया। चूँकि आजकल समाजों ने उपलब्धियों के मानदंडों की प्रमुखताएँ बना दी हैं, और खुलापन आ गया है इसलिए व्यावसायिक पारिश्रमिक संरचना में एक ही वर्ग के व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धाओं में वृद्धि हो गई। इस प्रकार, वर्ग-निर्भरता में तथा वर्ग-विभाजन की प्रबलता में कमी आ गई।

बॉक्स 32.02

गोल्डथोर्प और सी.लेवेलीन ने 'ऑक्सफोर्ड गतिशीलता अध्ययन' के आधार पर श्रमिक वर्ग में वर्ग-निर्माण के लिए सामाजिक गतिशीलता का आशावादी पक्ष दर्शाया है। उनके निष्कर्षों के अनुसार, चूँकि समकालीन समाजों में ऊपर की तरफ गतिशीलता नीचे की तरफ गतिशीलता से अधिक होती है, इसलिए वास्तव में बहुत कम लोग हाथ से काम करने वाले श्रमिकों के स्तर में नीचे की तरफ जाते हैं। इससे एक जैसे श्रमिक वर्ग का निर्माण होने लगता है क्योंकि प्रायः उनके उद्गम तथा अनुभव एक जैसे होते हैं जो एक-समान हितों को पूरा करने के लिए सामूहिक नीतियाँ बनाने के लिए आधार प्रदान करते हैं। इस प्रकार, हाथ से काम करने वाले श्रमिकों के बीच वर्ग-निर्भरता तथा एक जैसे वर्ग निर्माण की अधिक संभावना है।

उसी समय गोल्फथोर्प तथा लेवेलीन ने मध्य वर्ग में वर्ग-निर्भरता को नहीं माना। सदस्यों की विषम पृष्ठभूमि के कारण उनमें सम्बद्धता की कमी अर्थात् कर्म वर्गवादिता होती है और मध्य वर्ग का एकल सामाजिक वर्ग के रूप का खंडन होता है जो पिछले भाग में वर्णित केनिथ रॉबर्ट के 'विघटित' मध्य वर्ग के समान है।

32.3.5 सामाजिक व्यवस्था का रूप

जब से दुर्खाइम ने 'एनोमी' (सामान्य सामाजिक स्तरों की कमी) संकल्पना के बारे में लिखा है जिसका अर्थ है—समाज में ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने असीमित लक्ष्य और महत्वाकांक्षाएँ पूरी नहीं कर पाते हैं, अनेक लेखकों ने सामाजिक व्यवस्था पर सामाजिक गतिशीलता के प्रभावों के बारे में लिखा है। दुर्खाइम ने अपनी श्रेष्ठ पुस्तक *'सुसाइड'* में बताया है कि सामाजिक गतिशीलता का समाज और व्यक्ति दोनों पर उलटा प्रभाव भी हो

सकता है। उसके अनुसार पहले के समाज अपने स्तरीकरण व्यवस्था पर कठोर नियंत्रण रखते थे जिससे किसी विशेष समाज में रहने वाले व्यक्ति को अपनी महत्वाकांक्षाओं की वैधानिक सीमाओं का पता होता था। लेकिन जब से इन स्तरीकरण नियंत्रणों में कमी आई है और शक्ति तथा धन की आकस्मित वृद्धि एवं अर्थव्यवस्था के संकटों से समाज की नैतिक व्यवस्था के लिए काफी गंभीर स्थितियाँ पैदा हो गई हैं। न केवल परिवर्तनकालीन समय में जैसे आर्थिक पतन के (क्योंकि कोई श्रेणीकरण नहीं होगा) कारण अपितु समृद्धि या शक्ति की शीघ्र वृद्धि के कारण (क्योंकि महत्वाकांक्षाओं की कोई सीमा नहीं होती) व्यवस्था के सामाजिक एकता पर विघटनकारी प्रभाव पड़ता है। जिससे वैयक्तिक एकता के नष्ट होने के कारण व्यक्तियों में आत्महत्याएँ होती हैं। इससे समाज में अव्यवस्थावादी प्रवृत्तियों का पता चलता है।

इसी धारा में लिपसेट और बैंडिक्स तथा डोरमनी ने इस बात पर बल दिया है कि विभिन्न सामाजिक संरचनाओं पर सामाजिक गतिशीलता के भिन्न-भिन्न परिणाम होते हैं। सामाजिक गतिशीलता का पारंपरिक समाजों में अधिक विघटनकारी प्रभाव होता है। पारंपरिक समाज में स्तरीकरण की आरोपित व्यवस्था होती है जिसकी कठोर रूढ़िवादिता होती है और इस प्रकार ये समाज गतिशीलता के लिए तैयार नहीं होते। यह इस धारणा पर आधारित है कि पारंपरिक समाज में उत्पन्न वर्गों के दबाव काफी शक्तिशाली और बंधनकारी होते हैं। यदि ये गतिशीलता के कारण टूट जाएँ तो व्यक्ति अकेला पड़ जाता है औरे अपनी सामाजिक स्थिति तथा पहचान के लिए चिंतित रहता है। जबकि औद्योगिक समाज की स्तरीकण व्यवस्था में खुलापन होता है। इस व्यवस्था को जारी रखने में सामाजिक गतिशीलता एक सामान्य प्रक्रिया है।

यहाँ तक कि पी.ए. सोरोकिन ने भी 'सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता' (1927) की बात की है तथा सामाजिक गतिशीलता के विघटनकारी परिणामों के बारे में लिखा है। उसका विश्वास है कि सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक व्यवस्था की अस्थिरता, सांस्कृतिक अनिश्चितता तथा पारस्परिक निर्भरता की कमी को बढ़ाती है। इससे श्रेष्ठता की भी समाप्ति होती है जिससे राष्ट्रों को नुकसान होता है। इससे लघुता, व्यक्तित्व में छिछोरापन, संदेहवाद, कटुता और घृणा को बढ़ावा मिलता है। सोरोकिन के अनुसार, सामाजिक गतिशीलता अपनत्व तथा संवेदना में कमी, मानसिक तनाव तथा रोगों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एकाकीपन, एकांत, बेचैनी में वृद्धि, क्षणिक ऐंद्रिय सुखों की तरफ ले जाती है जिससे आगे चलकर समाज में नैतिक पतन होता है। सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता के विपरीत प्रभावों को संतुलित करने के लिए समाज तथा व्यक्ति के लिए भी इसके सकारात्मक प्रभावों को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में वह व्यक्तियों के ऐसे श्रेष्ठ और पर्याप्त वितरण की बात करता है जिसमें श्रेष्ठ व्यक्ति सबसे ऊपर हो जो संकुचित दृष्टिकोण तथा खतरनाक व्यावसायिक विशेष व्यवहारों को कम करे। इससे आर्थिक समृद्धि और शीघ्र सामाजिक विकास में सहायता मिलेगी। इससे सामाजिक व्यवस्था के लिए सामाजिक गतिशीलता के सकारात्मक परिणामों में वृद्धि होगी।

बॉक्स 32.03

एक पत्र में मेल्बिन एम.प्यूमिन ने भी 'विस्तृत समाज में सामाजिक गतिशीलता के कुछ नकारात्मक परिणामों' के बारे में वर्णन किया है (1957) उन्होंने अपने प्रसिद्ध संदर्भ के रूप में एक समकालीन व्यापक समाज को लिया है। उसने देखा कि जीवन के हर क्षेत्र में 'उपभोग' की प्रवृत्ति प्रेरक शक्ति के रूप में काम करती है। चाहे धन, आमदनी, सामाजिक स्तर, कला और सौंदर्यशास्त्र हो, संस्कृति हो या शासन-व्यवस्था या फिर परिवार, धर्म और शिक्षा जैसी मौलिक परंपराएँ — यहाँ तक कि सामाजिक विवेचन भी सभी को व्यापारिक तराजू पर तौला जाता है।

इसका अर्थ है कि कार्य का क्षेत्र, कार्य की पारंपरिक विशिष्टता सभी के अर्थ समाप्त हो गए हैं तथा शक्ति एवं सम्पत्ति उपभोग के माध्यम से सफल होने का मार्ग खुल गया है जो सामाजिक गतिशीलता का सबसे महत्वपूर्ण मानदंड बन गया है। इससे कार्य निंदनीय होने लगा और कुछ अच्छी आमदनी वाले कार्यों को छोड़कर सभी का सम्मान कम हो गया। कार्य के इस नकारात्मक रूप के सामाजिक अखंडता के लिए नकारात्मक परिणाम हुए।

फिर तीव्र सामाजिक गतिशीलता के कारण परिवार, संबंधी समूह, धर्म, राजनीतिक एवं शैक्षणिक संस्थाएँ आदि असंतुलित हो गईं। इन्हें आमदनी और आर्थिक उत्पादन के मानदंडों से मापा जाने लगा। इससे इन संस्थाओं की बदली परिभाषाओं तथा मानदंडों पर प्रभाव प्रभाव पड़ा तथा अब इनका आधार केवल उपयोगिता मूल्य हो गया। इस प्रकार, इनके पारंपरिक रूप से लिए जाने कार्यों का खतरा हो गया। इसके अतिरिक्त, सामाजिक गतिशीलता के अनुचित प्रभाव से न केवल विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ समाप्त हो रही थीं अपितु पुरानी पीढ़ी के संदर्भ में मानवीय पक्ष जो विगत समय की परंपराओं और परिपाटियों में ओत-प्रोत था, आबादी के नत गतिशील भावों के द्वारा घोर निंदनीय समझा जाने लगा। इसकी पुष्टि न केवल तथाकथित पश्चिमी समाजों में अपितु पूर्व के अनेक सहिष्णु समाजों में भी तेज़ी से खुल रहे ओल्ड डेज़ होम्स (वृद्ध आश्रमों) से होती है। कोई भी समाज यदि अंधाधुंध अपने भूतकाल में लौटता है या आधुनिकता का अविवेकपूर्ण खंडन करता है तो हानि उठाएगा। इसलिए एक समाज को तीव्र सामाजिक गतिशीलता के दुष्प्रभावों से दूर करने के लिए पारंपरिक और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना होगा।

इसके अतिरिक्त, मेलबिन प्यूमिन गतिशील आबादी के महत्वपूर्ण वर्गों में कृतज्ञता के प्रति सम्मान की घटती सामाजिक आलोचना की भी निंदा करता है। यहाँ तक कि ऐसे विद्वानों जिनसे सामाजिक व्यवस्था की रचनात्मक विवेचन की आशा की जाती है तथा एक खुले समाज को बनाने के लिए सक्रिय एवं गंभीर संवाद स्थापित करना जिनका दायित्व है उनपर भी सामाजिक गतिशीलता का निंदनीय प्रभाव पड़ा। उनके विचार अब राज्य के प्रसिद्ध उपायों के लिए विक्रय की वस्तु बन गए। वे अपना मूल्य अपने विचारों के विक्रय से प्राप्त करते हैं। संस्कृति और रुचि में उस समय ह्रास होता है जब कलाओं का मानदंड उनका बिक्री मूल्य हो जाता है। कला और संस्कृति का उपभोग श्रेष्ठ व्यक्तियों की सनक तथा फैशन के द्वारा निर्धारित किया जाता है। यह प्रणाली अधिसंख्य सदस्यों वाले समाज की लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों के लिए खतरा है क्योंकि प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति यहाँ तक कि विचार भी पूँजी और इससे संबंधित सामाजिक वस्तुओं की प्रगतिशील प्रभुता के आगे-पीछे हट जाते हैं। मानव समूह सांस्कृतिक समूह बनने की अपेक्षा स्तर के लिए प्रतिस्पर्धा करने वालों के संगठन बन जाते हैं। इस प्रकार, असमान समाज में यही सांस्कृतिक आबादी की संभावनाओं को कम कर देते हैं। जब सामाजिक व्यवस्था का ऐसा विघटित रूप प्रस्तुत किया जाता है तो व्यक्ति तीव्र सामाजिक परिवर्तन के अंधेरे में गुम हो जाता है। इस प्रकार, उत्पन्न असुरक्षा के परिणाम असम्बद्धता, गंभीर एकाकीपन, आत्म-घातकता तथा ऐसी ही अनेक प्रक्रियाओं की तरफ ले जाते हैं।

उपर्युक्त तीव्र सामाजिक गतिशीलता के द्वारा सामाजिक व्यवस्था की उत्पत्ति का वर्णन अति-रंजित है। पीटर एम.ब्लौ जैसे अनेक विचारकों द्वारा इस अति-रंजना का खंडन किया गया है। वह सामाजिक गतिशीलता द्वारा सांस्कृतिक संक्रमण को संकट में सामाजिक व्यवस्था के कारण बताने का प्रयास करता है। ब्लौ का तर्क है कि सामाजिक रूप से गतिशील व्यक्ति को मूल्यों, प्रवृत्तियों, व्यवहार और अपने उत्पत्ति-वर्ग या लक्ष्य वर्ग के मित्रों का चयन करने में दुविधा होती है। यह दुविधा ही है जो सामाजिक गतिशीलता के ज्ञात विभिन्न परिणामों की ओर ले जाती है जैसे सामाजिक विघटन, असुरक्षा या सामाजिक रूप से गतिशील व्यक्तियों की अति-समरूपता। इसलिए ब्लौ वास्तव में सामाजिक व्यवस्था के

विघटनकारी रूप को चुनौती नहीं देता अपितु वह सांस्कृतिक संक्रमण की परिकल्पना के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता द्वारा सामाजिक परिवर्तन के कारणों को निर्धारित करने का प्रयास करता है।

> **अभ्यास 2**
> भारत में सामाजिक गतिशीलता के विभिन्न परिणामों की व्याख्या कीजिए। एक सूची बनाइए और फिर अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के साथ चर्चा कीजिए।

विघटनकारी परिकल्पना के प्रतिपादकों द्वारा सामाजिक व्यवस्था के निराशाजनक वर्णन (जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है) के विपरीत इंगलैंड में फ्रेंक पार्किन तथा सी.जे.रिचड्र्सन ने तथा एच.एल.बिलंस्की और एच.एडवर्ड ने अमेरिका में पूँजीपति समाज में वर्गों की जाँच की। फ्रेंक पार्किन ने उर्ध्व गतिशीलता की उच्च दर के अपने निष्कर्ष में स्पष्ट किया कि यह राजनीतिक सुरक्षा उपाय के रूप में कार्य करता है। उर्ध्व गतिशीलता व्यक्तियों को उच्च स्थिति में पहुँचने और अधिक आमदनी की अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के अवसर प्रदान करती है। परिणामस्वरूप विकास से होने वाली कुंठाओं को रोकती है जिसके अभाव में यदि ये तीव्र हो जाए तो सामाजिक ताना-बाना खतरे में पड़ सकता है। प्रायः जो व्यक्ति श्रमिक वर्ग से संचलन करता है वह अपने छोड़े गए साथियों के बारे में चिंतित होने की अपेक्षा स्वयं का उच्च वर्ग के नए नियमों और सिद्धांतों से तालमेल बैठाने के लिए अधिक चिंतित होता है। इस प्रकार, पूँजीवादी समाज में वर्गों के बीच वर्ग संघर्ष की तीव्रता कम हो जाती है। दूसरी तरफ, एच.एल.बिलंस्की और एच.एडवर्ड ने 'नीचे की तरफ गतिशीलता' के परिणामों की जाँच की। उनके अनुसार मध्य वर्ग से वास्तव में सामाजिक क्रम के श्रमिक वर्ग मे संचलन करने वाले व्यक्ति प्रायः अपनी निम्न-स्थिति को स्वीकार नहीं करते तथा श्रमिक वर्ग के नियमों के अनुरूप स्वयं को समायोजित नहीं कर पाते। वे अपनी समाप्त स्थिति को पुनः प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्न करते रहते हैं। इस प्रकार, उनके दृष्टिकोण में रूढ़िवादिता की उत्पत्ति झलकती है। इस प्रकार, इंगलैंड में सामाजिक अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार न तो उर्ध्व गतिशीलता और न ही नीचे की तरफ गतिशीलता बिछुड़ने वालों की किसी भावना को भड़काती है या उन्हें अपने वर्तमान समूह से कोई असंतोष होता है। इसके सामाजिक व्यवस्था के लिए कोई विघटनकारी परिणाम भी नहीं होते। इस प्रकार, दोनों उर्ध्व और नीचे की तरफ गतिशीलताओं की प्रवृत्ति अपनी स्थिति को मज़बूत करने की होती है। दोनों प्रवृत्तियाँ अपने सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में अधिक रूढ़िवादी होती है, एक (उर्ध्व गतिशीलता) गतिशीलता के बाद अपनी प्राप्तियों को एकत्रित करती है, तथा दूसरी (नीचे की तरफ गतिशीलता) अपनी पहले वाली स्थिति को पुनः प्राप्त करने की आशा रखती है। इस प्रकार, इनमें से कोई भी समाज की स्थिरता या अखंडता के लिए खतरा नहीं है।

सामाजिक व्यवस्था के दोनों रूपों का अध्ययन वास्तविक और प्रभावशाली अध्ययनों पर आधारित है। ये किसी समाज पर कहाँ तक लागू होते हैं, यह संवाद का विषय है। लेकिन हम सुरक्षित रूप से यह मान सकते हैं कि इसमें वास्तविक रूप से दोनों ही रूपों के तत्व मिश्रित हैं। सामाजिक गतिशीलता के परिणाम न तो पूरी तरह निराशावादी हैं और न ही अति-रूप से सकारात्मक। इस प्रकार, वर्तमान समाजों की सामाजिक व्यवस्था का रूप क्रमिक रूप से सामाजिक व्यवस्था के दो ध्रुवों के बीच में रहेगा।

बोध प्रश्न 1

1) बूर्जुआ तत्व क्या है? इसे अभिधारण न मानकर परिकल्पना के नाम से क्यों जाना जाता है? पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2) क्या हम श्रमिक वर्ग को एक सामाजिक समूह कह सकते हैं? अपने कारण पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

3) 'विघटित मध्य वर्ग' फेज़ से आप क्या समझते हैं? पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

4) वर्ग निर्भरता पर सामाजिक गतिशीलता दर का क्या प्रभाव पड़ता है? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

5) सामाजिक गतिशीलता के परिणाम के रूप में सामाजिक व्यवस्था के रूप की व्याख्या कीजिए। अपना उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

32.4 सामाजिक गतिशीलता का राजनीतिक परिणाम

राजनीतिक व्यवहार पर सामाजिक गतिशीलता के परिणामों का प्रभाव स्तरीकरण गतिविज्ञान के माध्यम से भी देखा जा सकता है। यह प्रायः इस बात पर निर्भर करता है कि स्तरीकरण व्यवस्था से किस आयाम का विरोध किया जा रहा है। प्रायः यह देखा गया है कि श्रेष्ठ सामाजिक स्थिति (या उच्च वर्ग) को उठने वाले (जिन्हें प्रायः नव-धनाढ्य वर्ग कहा जाता है) श्रेष्ठ वर्ग द्वारा विरोध किया जाता है तो उनके आक्रमण को रोकने के लिए सभी प्रतिरोध प्रस्तुत किए जाते हैं। ऐसा उच्च व्यावसायिक और उपभोग गतिशीलता की अवधि में होता है। उच्च वर्ग को डर होता है कि ऐसे पारंपरिक मूल्य फिर आरोपित न हो जाएँ जिनके साथ उनकी प्राप्त मूल्यवान स्थिति को पुनः परिभाषित करने वाले अविवेकपूर्ण तत्व सम्बद्ध हो। यद्यपि नव-धनाढ्यों द्वारा श्रेष्ठ स्थिति में प्रवेश के लिए काफी आमदनी, शिक्षा, व्यावसायिक स्तर, तथा अन्य मानदंड प्राप्त कर लिए जाते हैं तो भी पुराने श्रेष्ठ वर्ग चारित्रित प्रश्रय वाले अन्य पारंपरिक मानदंड जैसे सगोत्रता, जातीय उत्पत्ति, खाने-पीने का पाश्चात्य शिष्टाचार आदि लागू कर देते हैं ताकि उनकी उच्च स्थिति और सम्बद्धता को मना किया जा सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यावसायिक गतिशीलता से सामाजिक गतिशीलता नहीं होती। पुराने श्रेष्ठ वर्ग के ये कार्य नव-गतिशील महत्वाकांक्षी लोगों को सामाजिक प्रक्रिया की उपयुक्तता में विश्वास न करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा वे उनकी संस्कृति के खुलेपन और लोकतांत्रिक रूप पर प्रश्न खड़े करने लगते हैं। इस प्रकार, अस्वीकृत होने पर वे स्थिति के वैकल्पिक प्रतीक बना लेंगे जैसे विभिन्न मानव जातीय एसोसिएशन (उदाहरण के लिए, भारत में दलित एसोसिएशन), राजनीतिक दल (जैसे समाजवादी दल या राष्ट्रीय जनता दल), आवासीय स्थल (जैसे अम्बेडकर नगर), विश्वविद्यालय, विद्यालय तथा मनोरंजन स्थल आदि। यह प्रक्रिया पुराने श्रेष्ठ वर्ग और नव-धनाढ्य वर्ग दोनों में उनके मतदान के समय दिखाई देगी। पुराना श्रेष्ठ वर्ग जो अपने पारंपरिक सांस्कृतिक तत्वों को एकत्रित एवं मज़बूत करता है अपने व्यावहारिक दृष्टिकोण में घोर रूढ़िवादी बन जाएगा। इस प्रकार, घोर 'दक्षिण पंथ' को सामाजिक वर्ग की स्थिति की असुरक्षा की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है। जबकि दूसरी तरफ, नव-गतिशीलत महत्वाकांक्षी उस राजनीतिक दल को समर्थन देंगे जो पुराने श्रेष्ठ वर्ग का विरोध करता हो। इस प्रकार, गतिशील महत्वाकांक्षियों द्वारा बनाए गए दबाव व्यक्तियों को और अधिक उग्र राजनीतिक विचारधारा अपनाने के लिए पहले से ही तैयार करेगा।

बॉक्स 32.04

उपर्युक्त प्रक्रिया से सम्बद्ध है फ्रेंज न्यूमैन (1955) का राजनीति का षड्यंत्र सिद्धांत जो सामाजिक वर्ग की असुरक्षा के असंगत तत्वों को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति या वर्ग-विशेष अपनी लक्ष्य स्थिति को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है या नीचे की तरफ गतिशीलता को महसूस करता है तो इसके लिए वह अपनी अयोग्यता में या अपनी स्तरीकरण व्यवस्था में कारण ढूँढने की अपेक्षा अपनी सामाजिक बुराइयों के लिए दूसरे वर्ग पर आरोप लगाते हैं। इस दूसरे वर्ग में किसी अज्ञात दुष्ट वर्ग के षड्यंत्र की कल्पना होती है। और अन्यत्र आरोप लगाकर वे सोचते हैं कि जितना अच्छा वे कर सकते थे उन्होंने किया और वे निरंतर स्तरीकरण व्यवस्था पर कायम रहते हैं जो उन्हें समाज में मूल्यवान स्थिति प्रदान करता है। इस प्रकार, वे अपने समाज की सामाजिक संरचना में होने वाले वास्तविक परिवर्तनों की गणना नहीं करते। इस प्रकार, ऐसे अविवेकी सिद्धांतों पर ज़ोर देने वाले व्यक्तियों के राजनीतिक व्यवहार में भी ऐसी प्रवृत्तियाँ झलकती हैं। इससे वे राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे काल्पनिक या वास्तविक लक्ष्य वर्गों के विरुद्ध अपनी शक्ति को एकत्रित करने की प्रवृत्ति अपना लेते हैं।

बहुत बार सामाजिक गतिशीलता की स्थिति विसंगति उत्पन्न कर देती है। कहने का अर्थ है कि आवश्यक नहीं कि एक क्षेत्र में गतिशीलता अनिवार्यतः दूसरे सभी क्षेत्रों में भी गतिशीलता पैदा करे। उदाहरण के लिए एस.एम. लिपसेट ने लसकेचवान (कनाडा) के प्रदेश में लोगों के राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन करते हुए पाया कि सोशलिस्ट पार्टी (समाजवादी दल) के नेता या तो व्यापारी या व्यावसायिक थे। यद्यपि वे उच्च व्यावसायिक और आमदनी वाली श्रेणी से संबंधित थे, फिर भी वे सामाजिक क्रम में निम्न-वर्गीय समझे जाते थे क्योंकि वे मुख्यतः गैर-एंग्लो सैक्सन वंश (उनकी आबादी 90 प्रतिशत थी) से थे। फिर भी, 'उच्च स्थिति तथा उच्च वर्ग वाले एंग्लो सैक्सन आबादी ने गैर-एंग्लो सैक्सन वर्ग का आर्थिक शोषण नहीं किया। इसके बावजूद वे उच्च व्यावसायिक और आमदनी वालों को प्रायः मिलने वाले विशेषाधिकारों से वंचित थे। इस प्रकार दोनों समूहों के मध्य गहरी दरार थी। उनकी स्थितियाँ ऐसी थीं कि अल्पसंख्यक वर्ग (गैर-एंग्लो सैक्सन वर्ग) ने उच्च वर्ग (एंग्लो सैक्सन वर्ग) का विरोध करने वाले राजनीतिक दल के साथ वैचारिक रूप से सम्बद्ध होना अच्छा माना। इस प्रकार, कुंठित महत्वाकांक्षियों के उग्र राजनीतिक विचारों के कारण स्थिति में विसंगति उत्पन्न हुई।

इसी विचारधारा में रोबर्ट माइकेल ने प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व यूरोपीय सामाजिकता का विश्लेषण किया। यहूदियों ने यूरोपीय सामाजिकता आंदोलन में प्रसिद्ध स्थिति प्राप्त की थी। वे वैध रूप से पूरी तरह मुक्त थे तब भी संपूर्ण पूर्वी यूरोप और जर्मनी में सामाजिक रूप से उनके साथ भेदभाव किया जा रहा था। यद्यपि वे आर्थिक रूप से बहुत अमीर थे, फिर भी प्रचलित व्यवस्था में उनके अनुरूप कोई सामाजिक या राजनीतिक लाभ सुनिश्चित नहीं था। केवल समाजवादिता का आदर्श राज्य ही उनकी पीड़ा और अस्वीकृति की भावना को समझता था। यहूदियों का यह व्यवहार हाल ही के समय तक भी मौजूद था। उदाहरण के लिए, स्कैनडिनेविया में जहाँ यहूदी विरोधी भावना अपेक्षाकृत कम है और यहूदी निरंतर अच्छी सामाजिक स्थिति प्राप्त करते जा रहे हैं। आशा की जाती है कि वे पहले जितनी सीमा तक वामपंथी राजनीतिक झुकाव नहीं रखेंगे।

स्थिति में यह विसंगति अनेक सामाजिक स्थितियों में क्रम परिवर्तन और मिश्रण तथा राजनीतिक क्षेत्र में उनके वैचारिक तत्वों की तरफ ले जा सकती है। अतः एक व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक, सांख्यिकीय तथा राजनीतिक हालातों के आधार पर विद्यमान निम्नलिखित में से कोई भी मिश्रण देख सकता है।

1) जब किसी सामाजिक वर्ग की स्थिति उसकी व्यावसायिक अथवा आर्थिक स्थिति से कमज़ोर होती है तो राजनीतिक झुकाव वामपंथी होता है। सामान्य परिस्थितियों के बावजूद समूह का दृष्टिकोण रूढ़िवादी होता है।

2) जब एक सामाजिक समूह की स्थिति विघटित होती है तो आर्थिक एवं सामाजिक रूप से प्रबल वर्ग के विरुद्ध मौलिक स्थिति लाने के लिए राजनीतिक रूप से उसका झुकाव वामंपथी हो जाता है।

3) जब किसी सामाजिक वर्ग की स्थिति उसकी व्यावसायिक और आर्थिक स्थिति से उच्च होती है तो राजनीति में झुकाव दक्षिणपंथी हो जाता है।

4) जब नव-धनाढ्य वर्ग कभी-कभी पुराने श्रेष्ठ वर्ग की अपेक्षा अधिक रूढ़िवादी हो जाता है तो राजनीति में झुकाव दक्षिणपंथी हो जाता है क्योंकि वे सामाजिक क्रम में ऊपर आना चाहते हैं तथा पुराने श्रेष्ठ वर्ग द्वारा यह स्वीकृत हो जाता है।

5) जब किसी सामाजिक वर्ग की उच्च स्थिति को नई गतिशीलता के हमले से चुनौती मिलती है तो राजनीति में झुकाव अत्यधिक दक्षिणपंथी हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब पुराना श्रेष्ठ वर्ग नव-धनाढ्य वर्ग के लिए अपनी श्रेणी में उनके प्रवेश को बंद कर देता है।

6) किसी सामाजिक वर्ग की पुरानी लेकिन अवनत होती उच्च स्थिति के कारण उसका दृष्टिकोण अधिक लचीला हो जाता है जो राजनीति में झुकाव वामपंथी हो जाता है।

बॉक्स 32.05

सामाजिक गतिशीलता का एक अन्य परिणाम जिसके बारे में पी.ए.सोरोकिन (1927) प्रत्यक्ष उल्लेख करता है और जो जी.मोसका (1939) तथा वी.पैरेटो (1935) के 'श्रेष्ठ वर्ग के संचलन ' सिद्धांत में अप्रत्यक्ष रूप से निहित है, वह है—निम्न स्तर से उच्च स्तर में नियुक्ति। मोसका और पेरेटो के 'श्रेष्ठ वर्ग संचलन' के सिद्धांत के अनुसार श्रेष्ठ वर्ग में जब श्रेष्ठता तत्व समाप्त हो जाते हैं तो वे निम्न स्तर में से श्रेष्ठ गुण वाले व्यक्तियों को नियुक्त कर लेते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती है। यदि ऐसा नहीं होगा तो उच्च स्तर में विकृत तत्वों की संख्या बढ़ जाएगी जिसका संपूर्ण समाज में नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, निचले स्तर में श्रेष्ठ घटक गतिशीलता अवसरों के अभाव में एकत्रित हो जाएंगे। एकत्रित क्रिया में वे विकृत अल्प-संख्यक शासक को हटाकर शासन की बागडोर संभाल लेते हैं। यहाँ तक कि सोरोकिन ने गतिशीलता के अभाव में उच्च वर्ग में अधिक विकृत घटकों के नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख किया है।

मोसका ने सामाजिक गतिशीलता के परिणामस्वरूप आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में एक नए सामाजिक वर्ग-मध्य वर्ग- के प्रादुर्भाव को देखा है। वह मध्य वर्ग को उस मध्य स्तर के रूप में देखता है जहाँ से प्रायः श्रेष्ठ वर्ग अपने रिक्त स्थान भरने के लिए नए योग्य पात्रों का चयन करता है। इस तरीके से निम्न स्तर में महत्वाकांक्षी और बुद्धिमान व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षा पूरी कर पाते हैं। इस प्रकार, उपरोक्त से देखा जा सकता है कि सामाजिक गतिशीलता के राजनीतिक परिणाम संपूर्ण समाज के प्रक्रियात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

बोध प्रश्न 2

1) नए गतिशील महत्वाकांक्षी द्वारा (नव-धनाढ्य वर्ग) उच्च वर्ग में जाने के प्रयास करने पर क्या होता है? लगभग पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

2) राजनीतिशास्त्र के षड्यंत्र सिद्धांत का क्या अर्थ है? पाँच पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

3) गतिशील समाज में 'स्तरीय विसंगति' की कौन-सी राजनीतिक शाखाएँ हैं? पाँच पंक्तियों में संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

4) श्रेष्ठ वर्ग का संचलन सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में कैसे सहायता करता है? पाँच पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

32.5 सामाजिक गतिशीलता का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिणाम

असमान स्तरीकरण व्यवस्था प्रमाण है जो अपने सदस्यों में पुरस्कार एवं विशेषाधिकार असमान रूप से बाँटती है। आधुनिक औद्योगिक समाज प्रायः लोकतांत्रिक रूपों में संगठित होते हैं जिनपर सभी तरफ से वैचारिक दबाव होता है क्योंकि आशा की जाती है कि उनमें सबके लिए समान अवसर हैं। यही मानदंड है 'सबके लिए अवसर'। जो उस समाज के सभी सदस्यों द्वारा अच्छी स्थिति में दिखने के लिए अर्थात् समाज में थोड़ी अच्छी, सबसे अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए मेहनत कराता है। लेकिन जिस प्रकार श्रेष्ठतम वस्तुएँ दुर्लभ हैं और इसलिए वे बहुमूल्य हैं ठीक उसी प्रकार, श्रेष्ठतम स्थिति भी दुर्लभ है और इसलिए वह भी बहुमूल्य है। प्रत्येक व्यक्ति उनको प्राप्त नहीं कर सकता। प्राथमिक शिक्षा से आरंभ होकर व्यक्ति के अभीष्ट स्थिति पर पहुँचने तक चयन की एक लंबी प्रक्रिया है। इसमें असफल होने के पर्याप्त अवसर हैं। इसलिए जो व्यक्ति अपने अभीष्ट लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते, मानसिक तनाव में रहते हैं। यह मानसिक तनाव उनकी योग्यता अस्वीकृत होने के कारण उत्पन्न होता है। बहुत से मामलों में व्यक्ति स्वयं भी अपने को स्वीकार नहीं कर पाता अर्थात् उसे स्वयं से नफरत हो सकती है। वह अपनी योग्यता से निम्न.स्थिति को स्वीकार कर लेता है। वेब्लेन के अनुसार, यह आत्म-विकास में बाधा के रूप में कार्य करता है। आत्म-योग्यता की यह नकारात्मक भावना प्रायः निचले स्तर और अल्पसंख्यक वर्गों के व्यक्तियों में पाई जाती है जैसे कि यहूदियों में। लेकिन इस आत्म-ग्लानिक की भावना को बनाए रखना कठिन है क्योंकि आत्म-योग्यता स्वतः पुनः ज़ोर डालती है और सामाजिक कार्य में चरम सीमा पर पहुँच जाती है। इसके संपूर्ण समाज के लिए अनेक आयाम हो सकते हैं। इस तीव्र मनोवैज्ञानिक व्यवहार के सामाजिक परिणाम प्रायः निम्नलिखित तीन प्रक्रियाओं में देखे जा सकते हैं, जैसा कि एम.एम.लिपसेट और एच.एल.जेटरबर्ग द्वारा प्रस्तुत किया गया है—

1) कुछ व्यक्ति उच्च वर्गों के मुख्य मूल्यों को अस्वीकृत कर सकते हैं। ऐसे मामलों में यह अस्वीकृति निम्न वर्गों के धार्मिक मूल्यों का रूप ले सकती है जो प्रायः धन और शक्ति के मूल्यों को अस्वीकृत करने से मना करती हैं।

2) दूसरे, प्रमुख मूल्यों को अस्वीकृत करने का दूसरा रूप और आत्म-योग्यता का दावा विद्रोही 'रोबिन हुड' विचारधारा या औपचारिक क्रांति या समाज सुधार आंदोलनों का रूप ग्रहण कर सकता है।

3) अंतिम, व्यक्ति अपनी स्थिति को सुधारने के लिए कानून या गैर-कानूनी प्रयत्न कर सकते हैं।

इस प्रकार, असमानता स्वाभाविक रूप से ही सामाजिक व्यवस्था में अस्थिरता लाती है।

इस प्रकार, आधुनिक औद्योगिक समाज में अस्थिरता का यह इतना व्यापक तत्व है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के लिए इसके नकारात्मक परिणाम होते हैं। जब किसी समाज के सदस्य अत्यधिक गतिशील होते हैं तो 'एनोमी' (दुखाईम द्वारा प्रतिपादित प्रसिद्ध सिद्धांत, देखें 32.3.5) संपूर्ण समाज में फैल जाता है। विभिन्न भूमिकाओं और स्थितियों की वर्षों पुरानी परिभाषाएँ विकृत हो जाती हैं यदि ये दूसरी परिभाषाओं द्वारा विकृत या परिवर्तित न हों तो भी पदधारी इतनी तेज़ी से गतिशील होते हैं कि उनके पास उन भूमिकाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक पारंपरिक दायित्वों में मिश्रित होने का न तो समय है और न ही

अभिरुचि। इस प्रकार, इसमें निर्मित किसी भूमिका की स्थिरता से उत्पन्न सुरक्षा तथा आशाएँ विकृत हो जाती हैं। इसका उन नवयुवकों के समाजीकरण के लिए विघटनकारी परिणाम होता है जो अपनी भूमिका निभाने की उचित तैयारी के अभाव में पर्याप्त रूप से अच्छी भूमिका निभाने के योग्य नहीं होते। यहाँ तक कि अभिभावक भी स्थितियों के तीव्र परिवर्तन के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। वे एक दशक में ही स्वयं को पुनः सामाजिक बनने की आवश्यकता महसूस करते हैं। यह समाज के बहुत बड़े भाग में व्यापक रूप से असुरक्षा की भावना भर देता है। इसी संदर्भ में अनेक विचारकों ने व्यक्ति के विघटित व्यक्तित्व या पार्श्व व्यक्ति की लघुता की बात की है।

इस प्रकार, सामाजिक गतिशीलता के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिणामों के विघटनकारी प्रभाव हो सकते हैं तो भी कुछ व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत गतिशीलता में आत्म-योग्यता का मार्ग पा सकते हैं। यह उनके व्यक्तिगत प्रयत्नों की सकारात्मक पराकाष्ठा है।

बोध प्रश्न 3

1) आत्म-योग्यता की अस्वीकृति का व्यक्ति के लिए क्या परिणाम होता है? लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

2) एक आधुनिक औद्योगिक समाज में असुरक्षा का विस्तार कैसे होता है? पाँच पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

32.6 सारांश

इस इकाई में हमने सामाजिक गतिशीलता के होने वाले परिणामों का तीन परिप्रेक्ष्यों से विश्लेषण किया है। पहला—इसका समग्र समाज में विस्तार अर्थात् सामाजिक परिणाम, दूसरा—इसका समाज में विभिन्न वर्गों के राजनीतिक व्यवहार पर प्रभाव अर्थात् राजनीतिक परिणाम तथा तीसरा, इसका आधुनिक औद्योगिक समाज में किसी व्यक्ति पर प्रभाव अर्थात् सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिणाम।

प्रथम भाग में सामाजिक परिणामों की चर्चा करते हुए आरंभ में हमने दो प्रमुख सबसे बड़े वर्गों श्रमिक वर्ग और मध्य वर्ग की वर्तमान स्थितियों एवं विशेषताओं का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। विभिन्न विचारधाराओं की प्रवृत्ति सामाजिक वर्ग के रूप में उनके रूप को नगण्य मानने या मज़बूत करने की रही है। इससे हम सामाजिक गतिशीलता दर के संदर्भ में वर्ग निर्भरता की प्रकृति की जाँच करते हैं अर्थात् उपर्युक्त समाज के खंडित वर्णन के संदर्भ

में विभिन्न वर्गों के मध्य संचलन की मात्रा का वर्णन किया गया है। अंतिम भाग में हमने सामाजिक गतिशीलता के परिणामों के रूप में सामाजिक व्यवस्था के रूपों का वर्णन करने का प्रयास किया है। अनेक पारंपरिक और प्रभावशाली अध्ययनों ने विघटनकारी परिकल्पनाओं को प्रेरित किया जबकि पीटर एम.ब्लौ के अमेरिकन गतिशीलता के अध्ययन ने संस्कृति-संक्रमण परिकल्पनाओं के निर्माण में सहयोग दिया। अंत में, नकारात्मक या विघटनकारी परिणामों को इंगलैंड में फ्रेंक पार्किन और अमेरिका में एच.एल.विलेंस्की और एच.एडवर्ड्स तथा सी.जे.रिचर्ड्सन द्वारा सामाजिक व्यवस्था के लिए किए अनुसंधानों द्वारा संतुलित किया गया।

सामाजिक गतिशीलता के राजनीतिक परिणामों में समाज के उच्चतम वर्ग उच्च वर्ग, शासक वर्ग (मोसका और पेरेटो) का विवरण दिया गया है। हमने वैयक्तिक तथा सामाजिक गतिशीलता का उनके राजनीतिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया है। राजनीतिक व्यवहार जो उनके मतदान के समय देखा जाता है। यह व्यावसायिक तथा आमदनी के आधार पर गतिशीलता अर्थात् स्तर-विसंगति के निष्फल सामाजिक स्तर की महत्वाकांक्षा के आधार पर वाम या दक्षिणपंथी विस्तार में देखा जाता है। इस प्रकार, हम विशेष सामाजिक अधिकार के अनुरूप और प्राप्त आमदनी रैंक के बीच विसंगति की डिग्री, राजनीतिक अतिवाद की डिग्री की गणना करते हैं। प्रत्येक वर्ग एक-दूसरे के शक्ति आधारों को कम करने का प्रयास करता है।

लोकतांत्रिक रूप पर बल देते हुए आधुनिक औद्योगिक समाज अपने प्रत्येक सदस्य की आकांक्षाएँ पूरी नहीं कर पाता और इस प्रकार इसमें अस्थिरता अंतर्निहित है। यह आधुनिक समाजों की अस्थिरता ही है जो इसके सदस्यों में वैयक्तिक स्तर पर दिखाई देती है। इससे सामाजिक गतिशीलता के नकारात्मक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिणामों को बढ़ावा मिलता है। इसके सकारात्मक पक्ष को उपयुक्त समाज सुधार आंदोलनों को आरंभ करने में देखा जा सकता है।

32.7 शब्दावली

सामाजिक स्तरीकरण : जहाँ पर लोगों को असमानता, आमदनी, सम्पत्ति, शक्ति, हैसियत आदि के आयामों से क्रमिक रूप से श्रेणी दी जाए।

अप-संस्कृति/पार्श्व संस्कृति : यह किसी सामाजिक वर्ग के मूल्यों, विचारधाराओं, व्यवहार का तरीका तथा जीवन-शैली जो भिन्न तो होते हैं लेकिन समाज की प्रमुख संस्कृति से जुड़े रहते हैं। यह समाज में अत्यधिक विभिन्नताओं के कारण उत्पन्न होती है।

सामाजिक व्यवस्था : जब समाज में सम्बद्धता और अंतर का वर्णन किया जाए।

वर्ग निर्भरता : एक ही वर्ग के सदस्यों के मूल्यों में समानता हो।

32.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

रिचड्र्सन, सी.जे. (1977), *कंटम्प्रेरी सोशल मोबिलिटी,* लंदन, रोटलेज एंड केगन पॉल।

बोटोमोर, टी.बी. (1964), *श्रेष्ठ वर्ग और समाज,* पेंगुइन बुक्स।

एक विस्तृत समाज में समकालीन गतिशीलता के कुछ अवांछित परिणाम, पत्रिका सामाजिक शक्तियाँ, अंक 36, अक्तूबर 1957, पृ.32-37 तक, प्युमिद्व मेलबिन (1957)।

32.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) बूर्जुआपन एक प्रक्रिया है जिसमें हाथ से कार्य करने वाले श्रमिकों की बढ़ती संख्या समाज के मध्य वर्ग में प्रवेश करती है तथा मध्य वर्ग बन जाता है। फिर भी, इसे एक परिकल्पना ही माना जाता है। चूँकि यह एक वैचारिक प्रमाण है, जिसे सर्वाधिक उपयुक्त परिस्थितियों में जाँचा और अस्वीकृत हो गया।

2) रातफ डैडरेंड्रोफ के अनुसार, आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था के कारण कार्य-प्रणाली में परिवर्तन हो गया है। श्रमिक वर्ग को उच्च कुशल, अर्ध-कुशल तथा अकुशल श्रमिकों में विभाजित किया जा सकता है। इनकी सामाजिक क्रम में भिन्न-भिन्न आर्थिक आमदनी तथा उसी के अनुरूप हैसियत होती है। तो भी, कुछ अन्य विचारक समान जीवन अवसर और उनकी एकरूपता के आधार पर हितों की साझी पहचान का उदाहरण देकर इस भिन्नता को महत्व नहीं देते।

3) मध्य वर्गों की विभिन्नता का वर्णन करने के लिए केनिथ रॉबर्ट्स ने 'विघटित मध्य वर्ग' शब्दों का प्रयोग किया है।

4) वर्ग निर्भरता पर सामाजिक गतिशीलता दर के प्रभाव के बारे में दो विचारधाराएँ हैं। एक, सामाजिक गतिशीलता की दर अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सम्बद्धता के अनुपात में होता है अर्थात् सामाजिक गतिशीलता दर अधिक होने पर वर्ग सम्बद्धता की दर कम होती है। दूसरे, उर्ध्व सामाजिक गतिशीलता सभी स्तरों पर रूढ़िवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती है।

5) पहले हमने 'विघटन परिकल्पना' की चर्चा की है जिसमें समग्र समाज के लिए सामाजिक गतिशीलता के विघटनकारी या नकारात्मक परिणामों का वर्णन किया गया है। फिर, संस्कृति-संक्रमण की परिकल्पना पी.एम.ब्लौ द्वारा प्रतिपादित की गई जिसमें व्यक्ति के लिए विघटनकारी परिणामों के कारण स्पष्ट किए गए हैं। अंत में, फ्रेंक पार्किन तथा अन्य विद्वान आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं क्योंकि वे सामाजिक गतिशीलता को सामाजिक व्यवस्था के लिए सकारात्मक परिणाम के रूप में देखते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) जब नव-गतिशील महत्वाकांक्षी लोग उच्च वर्ग की श्रेणी में आने का प्रयास करते हैं तो उच्च वर्ग को भय होता है और वे उनके प्रवेश को रोकने के लिए अनेक रुकावटें लगाते हैं। ये रूकावटें इतनी अधिक होती हैं कि वे पारंपरिक मानदंडों का आश्रय भी ले लेते हैं ताकि नव-गतिशील व्यक्तियों के प्रवेश को रोका जा सके।

2) सामाजिक वर्ग की असुरक्षा के अतार्किक तत्व का प्रतिपादन फ्रेंज न्यूमैन द्वारा किया गया। उसने 'राजनीति के षड्यंत्र सिद्धांत' का उल्लेख किया। इसमें सामाजिक बुराइयों के लिए बुराई करने वाले अज्ञात वर्ग पर आरोप लगाया जाता है।

3) एक गतिशील समाज में स्तर विसंगति सामाजिक वर्ग के विशेष वर्गों या किसी संपूर्ण सामाजिक वर्ग से जुड़े सामान्य राजनीतिक व्यवहार में परिवर्तन की तरफ ले जाती है। इस प्रकार, इसकी झलक हमें व्यक्तियों और वर्गों के मतदान करने के व्यवहार में दिखाई देती है।

4) श्रेष्ठ व्यक्तियों का संचलन सामाजिक क्रम में महत्वाकांक्षी और बुद्धिमान व्यक्तियों को उन्नति के अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार, कुंठित महत्वाकांक्षाओं को समाप्त करता है। अतः दार की प्रबलता को कम करता है और श्रेष्ठ व्यक्तियों को शामिल कर सामाजिक क्रम को अबाधित रूप से नया रूप प्रदान करता है।

बोध प्रश्न 3

1) व्यक्ति उच्च वर्गों की धन और शक्ति की प्रमुखता को अस्वीकार कर सकते हैं या वे वैयक्तिक रूप में अथवा समाहिक रूप में सुधार आंदोलन आरंभ कर सकते हैं। या फिर भी किसी भी तरीके से अपनी व्यक्तिगत स्थिति को सुधारने के प्रयत्न कर सकते हैं।

2) तीव्र सामाजिक गतिशीलता पारंपरिक भूमिकाओं के स्तरों तथा इनमें निहित आशाओं को समाप्त कर सकती है। व्यक्ति प्रभावशाली ढंग से अस्थिर और आधार-विहीन हो सकता है। इस प्रकार, एक आधुनिक औद्योगिक समाज में असुरक्षा का प्रसार हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

गिड्डेंस ए. (1989) *सोशियोलॉजी,* इंगलैंड : पॉलिटी प्रेस।

गोल्डथोर्प जे.एच. एण्ड फ्रिकसन आर. (1994), ट्रेंड्स इन क्लास मोबिलिटी - दि पोस्ट वार यूरोपियन एक्सपीरियंस इन ग्रुस्की (संपा) *सोशल स्ट्रेटिफिकेशन कलास रेस एण्ड जेंडर,* लंडन वेस्टवयू प्रेस।

लिपसेट एस.एम. एण्ड आर. बेंडिक्स (1959) *सोशल मोबिलिटी इन इंडस्ट्रियल सोसायटीज़,* बर्केले : यूनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

सिंगर एम. एण्ड कोहा बी (संपा) 1996, *स्ट्रक्चर एण्ड चेंज इन इंडियन सोसाइटी,* जयपुर : रावमत, अध्याय 8, 9, 10।

सिंह, वाई (1986) *मॉडर्नाइज़ेशन ऑफ इंडियन ट्रैडिशन,* जयपुर : रावत

सोरोकिन पी.ए (1927), *सोशल एण्ड कल्चरल मोबिलिटी,* ग्लेनकाइ : फ्री प्रेस।

श्रीनिवास एम.एन. (1966), *सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया,* मुम्बई : ओरियंट लांगमैन।

टुम्युन मेल्वीन एम. (1957), *अन-प्लांडिड कंसेक्विसेज़ ऑफ सोशल मोबिलिटी इन ए मास सोसाइटी सोशल फोर्स,* वोलः 36 अक्तूबर, 1957 पृ.32-37।